दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड
DSSSB PRT, TGT & PGT
ROJGAR
ANKIT
Part(A+B)
SCHOLAR BATCH
हिन्दी
अलंकार
Part -2
LIVE 04-05-2024 09:00 AM

श्लेष अलंकार - जब एक ही शब्द बिना आवृत्ति के दो या दो से अधिक अर्थ प्रकट करता है उसे श्लेष अलंकार कहते है।

चिपकना

इसमें युग्म या जोड़ा नही बनता

उदाहरण -

- रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सून
  पानी गये न ऊबरे मोती मानुस चून।
  (पानी – आत्मसम्मान, जीवन, क्रान्ति)

उलट-फेर

- को घटि ये वृषभानुजा वे हलधर के वीर
  (हलधर – बलराम, बैल)

- मंगन को देखि पट देत बार-बार है। (पट – वस्त्र, किवाड़)
- विमाता बन गई आँधी भयावह
  हुआ चंचल न फिर भी श्याम घन वह (श्यानघन – काले बादल, श्रीकृष्ण)

[redacted]

वक्रोक्ति अलंकार - जहाँ उच्चारण के कारण श्रोता वक्ता की बात का गलत अर्थ निकाल लेता है। वहाँ वक्रोक्ति अलंकार होता है।

उदाहरण -

- उसने कहा जाओ मत, बैठो यहां
  मैंने सुना जाओ, मत बैठो।
- को तुम हो इत आयो कहा, घनश्याम हो तू कितू बरसों।।

  श्रीकृष्ण

  काले बादल
- कौन द्वार पर राधे मैं हरि, हरि का क्या काम यहाँ।।

  वानर

वीप्सा अंलकार - आदर, आश्चर्य, घृणा आदि प्रदर्शित करने के लिए किसी शब्द को बार-बार दोहराना तब वहाँ वीप्सा अलंकार होता है।

उदाहरण -

- शिव-शिव-शिव कहते हो ये क्या ऐसा फिर मत कहना ।
- मधुर-मधुर मेरे दीपक जल
- हा!हा! इन्हें रोकन की टोक न लगाओ तुम।
- छि!छि! यहां गन्दगी है।
- राधा मन मोहि-मोहि मोहन मयी-मयी।
- चल! चल! यहां से।
- सुनो! सुनो! मेरी बात।

② - अर्थालंकार ⇒ जहाँ पर कविता के अर्थ के माध्यम से चमत्कार उत्पन्न हो वहाँ अर्थालंकार होता है।

उपमा अलंकार - जहाँ उपमेय की उपमान से समान गुण धर्म के आधार पर तुलना व्यक्त की जाती है वहाँ उपमा अलंकार होता है

↓
तुलना

मुख चन्द्रमा के समान सुन्दर है
↓ उपमेय ↓ उपमान ↓ वाचक शब्द ↓ सा० धर्म

इसके चार अवयव होते हैं -

(i)- उपमेय - जिसकी तुलना की जाए
(ii)- उपमान - जिससे तुलना की जाए
(iii)- साधारण धर्म - जो उपमेय और उपमान में समान रूप से हो
(iv)- वाचक शब्द - समानता बताने वाले शब्द

उदाहरण -

वाचक शब्द – समानता बताने वाले शब्द (सा, सी, से, सम, सरिस, समान, इव, यही, जैसे, इत्र, यत्र, तत्र)

- पीपर पात **सरिस** मन डोला
- मुख चन्द्रमा के **समान** सुन्दर है
- हरिपद कोमल कमल **से**

- खिली हुई हवा फिरकी - सी आई, चली गई
- मखमल के झूले पड़े, विशाल हाथी - सा टीला
- प्रातः नभ था बहुत नीला शंख जैसे
- नवल सुन्दर श्याम शरीर की, सजल नीरद - सी कल कान्ति थी।

रूपक अलंकार - जहाँ उपमेय में उपमान का निषेधरहित आरोप हो वहाँ रूपक अलंकार होता है।

इसमें वाचक शब्दों का प्रयोग नही होता है।

योजक चिह्न (-)

उदाहरण -

नोट – इसमें वाचक शब्दों का प्रयोग नहीं होता है।

- उदाहरण – चरण - कमल बंदौ हरिदाई
- मैया मैं तो चन्द्र - खिलौना लैहों
- अपलक - नभ नील नयन विशाल
- मन - सागर मनसा लहरि बूड़े बहे अनेक

- बीती विभावरी जागरी **अम्बर-पनघट** में डुबो रही ताराघट उषा नागरी
- **शशि-मुख** पर घूँघट डाले अंचल में द्विप छिपाए
- पायों जी मैंने **राम-रतन** धन पायों।
- **राम-नाम** मणि दीप धरू, जीह देहरी द्वार। (श्रीराम नाम रूपी मणिमय दीपक जिह्वा रूपी दहलीज)

- संकर चापु जहाजु, सागर रघुबर बाहुबलु। (शिव का धनुष रूपी जहाज)
- बढ़त-बढ़त संपत्ति-सलिल, मन सरोज बढ़ जाए। (संपत्ति रूपी सलिल, मन रूपी सरोज)

उत्प्रेक्षा अलंकार - जहाँ उपमेय की उपमान से सम्भावना व्यक्त की जाए वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है।

↓

सम्भावना

उदाहरण -

वाचक शब्द – (जनु, मनु, जानो, मानो, लेकिन, वरन्, परन्तु, किन्तु, जनहुं, ज्यों, मनहुं, जहां, वहां, कहां)

- उदाहरण – सोहत औढ़े पीतु पटु, स्याम सलौने गात।
  मनहुं नीलमनि सैल पर आतपु परयौ प्रभात
- चमचमात चचंल नयन विच घूँघट पट छीन।
  मनहुं सुरसरिता विमल, जल उछरत जुग मीन।।

- उसकाल मारे क्रोध के तनु कापंने उसका लगा। मानो हवा के जोर से सोता हुआ सागर जगा।

रूपक
उत्प्रेक्षा
उपमा

- फूले कास सकल महि छाई। जनु बरसा रितु प्रकट बुढ़ाई।।
- ले चला साथ मैं। तुझे कनक ज्यों भुक्षुक लेकर स्वर्ण झनक
- अति कटु वचन कहति कैकेयी, मनहुँ लोन जरे पर देई।